

ASMA ARCHIVES

1.066

1012

[illegible]

卷之四

155 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045

ॐ ह्रीं मि ३२

ह्रस्वय ३

निह ३

सिह २

कसु १

कोविह २

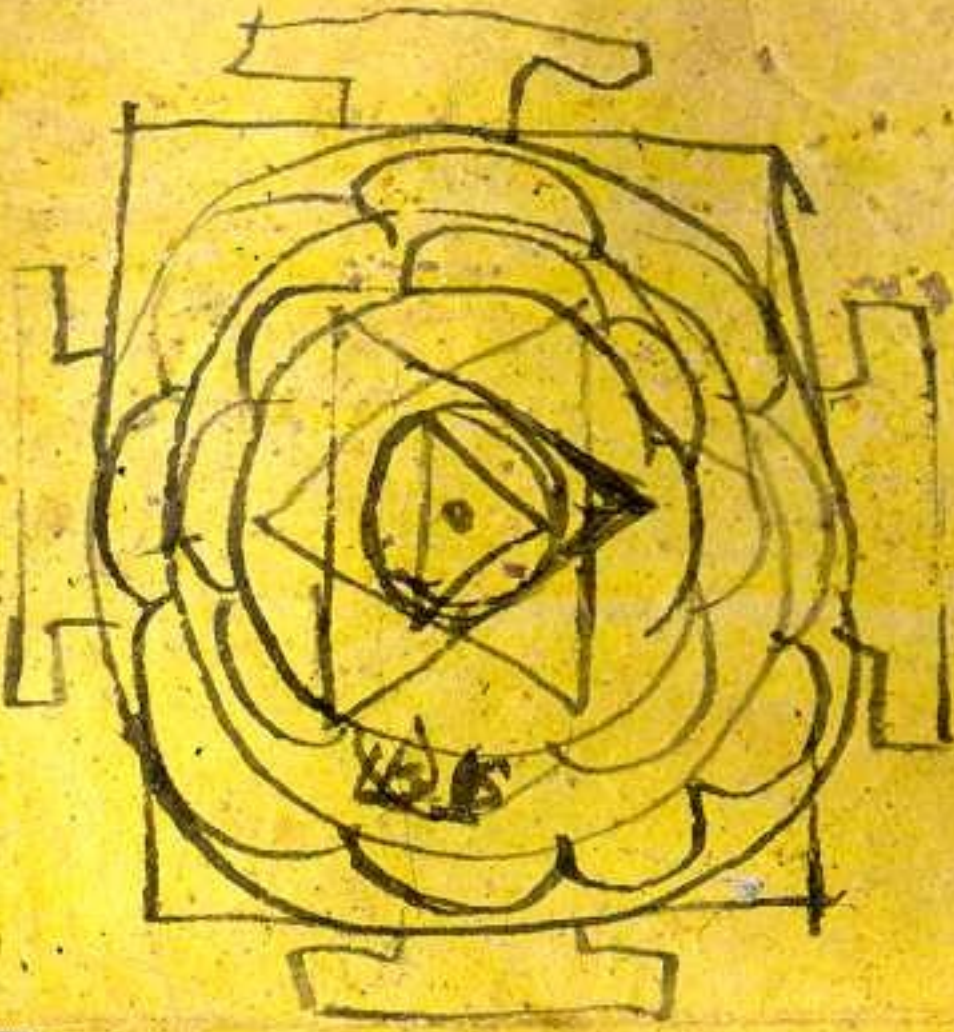
ह्रस्वयत्र २

समलगया २

तथा २, २, २, २, २

कोप २, २, २, २, २

महामात्रि नमः



१ गुन स्नानम ॥ ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ पूजा स्नान वन ॥ ॥ वाला
मनुन नाशिय ३ ॥ ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ अध्यामि स्नान ॥ ॐ विद्यां नमः
॥ अध्यामि स्नान ॥ सोऽश्विन नमः ॥ अध्यामि स्नान ॥ ॥ दान स
कनान ॥ ॥ दान दवना स्नानम ॥ श्रुत नमः कनान ॥ ॐ नमः शिवाय नमः
कमना स्नानाय नमः ॥ स्नान क, कायाव, धव शिवाय, गुन नमः स्नान याय ॥
यानि मन्त्रान् नमः स्नान याय ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥
पनय नमः ॥ खवस ॥ ॐ गुन स्नानम ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॥

प्राप्तमया ॥ ॥ श्रीं ह्रीं त्रैलोक्याय ॥ वंदे देवीं च नीयं ॥ कुनका ॥
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ ॥ श्रीं ह्रीं त्रैलोक्याय ॥ वंदे देवीं च नीयं ॥ कुनका ॥
 वंदे देवीं च नीयं ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ मधुमा ॥ श्रीं ह्रीं त्रै
 लोकाय ॥ वंदे देवीं च नीयं ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ कुनका ॥
 ननद ॥ श्रीं ह्रीं त्रैलोक्याय ॥ वंदे देवीं च नीयं ॥ कुनका ॥
 स्वाहा ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ श्रीं ह्रीं त्रैलोक्याय ॥ वंदे देवीं च नीयं ॥
 कुनका ॥ वंदे देवीं च नीयं ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ श्रीं ह्रीं त्रैलोक्याय ॥
 नमो ॥ मूलमनुना ॥ ३ ॥ ॥ श्रीं ह्रीं त्रैलोक्याय ॥ वंदे देवीं च नीयं ॥

सूर्यमस्तुलाय२॥ साममस्तुलाय२॥ तं वथान नली॥ गंगचद्यादि॥
 चतुस्तान्नय॥ जयतप१०॥ धनू यानिमूढाकन॥ अनसमस्तुलाय॥
 पाणपूजा॥ अग्निमस्तुलाय२॥ सूर्यमस्तुलाय२॥ साममस्तुलाय२॥
 उद्यः॥ धन॥ त्रैकभवं पनवद्गुत्तनसुस्तमयं ध्रुवं कवधारुदाव
 द्गुत्तनं ननननासमाभ्याहं॥ त्रैङ्गी आग्निमस्तुलाय२॥ अग्निमस्तुलाय२॥
 महं चिक्काषयकस्वाहा॥॥ जय१०॥ धनू यानिमूढाकन॥ मूलनथान पाणसः
 उद्यः चतुस्तान्नय॥ कनन मूलन३॥ धनू यानिमूढानकन॥ अनसमस्तु
 लाय॥ थवजिनस गुन्ननयनयाय॥ त्रैलोक्याग्निमस्तुलाय२॥ अग्निमस्तुलाय२॥

मि नव्य यामि स्नाहा ॥ नं स्वाहा आप नम उ न आपादू कां प ॥ नं स्वाहा प नम पि
उ न आपादू कां प ॥ नं स्वाहा आप नानं प उ न आपादू कां प ॥ रु द य स ॥ ३ ॥ आ
वि न्न म स्ना यो न म ॥ थ ना पा र्थि वि जा प ॥ आत्म पूजा ॥ आत्म न र्क च न्न न म
आत्म च न्न नं ॥ आत्म सि ध र्म ॥ आत्म न्न र्ग नं न म ॥ आत्म पू र्ण ॥ न र्ण न य
दा व. थ म पु सा द का य ॥ र्ग न व लि वि य ॥ ॐ क्री सर्व वि च्च कृ ह्य सर्व र्ग नः
स्वा व लि ग्ट ॥ २ ॥ रु द स्वाहा ॥ ष उ ग न्या स ॥ पी ० पू जा ॥ ॐ आ ध न भ कि
क म ला स ना य ॥ पी ० द व ना य ॥ कूर्म स ना य ॥ ज न ना स ना य ॥

पद्मा ना ला म ना य ॥ पद्मा स ना य ॥ सूर्य मि भु ला य ॥ च उ न भ र्ग ॥
न ज स ॥ न प स ॥ स त्व य ॥ न नि का स्था य न म ॥ क ले क कृ पि का म डा
न आ वा रु न या य ॥ द व मि र की स न र. प लि वा न स म चि न ॥ या व त्व
पू ज यि ष्या मि. ना व त्वं सु स्मि ना र व ॥ त्रि ख अ म डा न स्ना न जा दा व ॥ ॥
ध्यान ॥ पू ष्ठी ली र्क त ना धा य न् शुद्ध वि क गि रं गि रं. न म द्र का ष म. ध
च. म भु लं च उ ना चि ष ॥ ज वा कू सु म सं का रं. न व पं ध क सं त्रि रं. न ज ४
स त्व न मा न र वा. या नि म भु लं सं त्रि रं ॥ म. ध ये व स दा द वी. सूर्य की ठि

[illegible][illegible]

स्नानम् ॥ आपनापलम्बुन स्नानम् ॥ आपनयुन स्नानम् ॥ आपनमपि युन
स्नानम् ॥ नृकलिंगलिखनम् ॥ यागिनेशं जकिनेशं ॥ हेनेशं ॥ म
हानेशं ॥ वृन्दादेशं ॥ संहनिनेशं ॥ सायुधेशं ॥ सवाहिनाेशं ॥
सुपनिवनाेशं ॥ आचिन्नमहाेशं ॥ ॥ मूलनप्रियाश्रुतिः ॥ थनाव
लिविय ॥ वीं वतु कायवल्लिगुद्ररखाहा ॥ गंगगपगयवल्लिगुद्ररखा
हा ॥ यां यागिखा वल्लिगुद्ररखाहा ॥ काकेतुपालायवल्लिगुद्ररखाहा ॥
ॐ श्रीसर्वविघ्नसर्वकुरुनखावल्लिगुद्ररुद्ररखाहा ॥ ॐ सर्वसि
द्धिपुदवन्निनियसर्वसिद्धिपुजकिनीयचिन्नमस्तु नक्षत्रिः ॥ म

वल्लिगुद्ररसिद्धिदविरुद्ररुद्ररखाहा ॥ मननविय ॥ ३ ॥ वलिपूजा
पतस्नानतयककाया ॥ वरकाया ॥ मनासर्वसर्वसिद्धिविधायिन
मममपिपुष्टिपुष्टि ॥ ममपुनरुक्तुसादन ॥ नानाचनेमजकन ॥
थनवल्लिपूजा ॥ थमसंखनहाय ॥ मूलनप्रियाश्रुतिः ॥ धूप
दीपनेशयनम ॥ उप १०५ ॥ समर्पनयाया ॥ गुक्तागिगुद्रखादि
थवजिलसुकगना ॥ ३ मलम ॥ गुनमस्तुलदयकस्नानतय ॥ यथम
की ॥ मृग ॥ ३ मलम ॥ मस्तुलकाकास्नादि ॥ मायाकस्तुलनीयागि ॥ ॥
विधनः स्नाननदुविधविहनानमनया ॥ विधयासः ॥ वृत्ताखवने

ननयाय ४५ नमस्तुते । नन्दक त्क नथा जननि सकला दानमनया । कू
पराजाय नक विमपिच मागानरवति ॥ आबानंत ज्ञाना नेव जान
मिपजन । विसृज्जनं न जानामि । त्वगमिपन मञ्जनी ॥ अनुराधादि ॥
पश्चिमदानमस्तुते ॥ ओं डीं डीं वूं सं ४ ॥ नत्व ~~म~~ धनयाय ॥ थवताका
या ॥ ३ ॥ नव्यनयाय ॥ ३ ॥ ॥ न्यासलिकाया ॥ गिया ॥ ३ ॥
कनकावतु नमस्तुते मञ्जनी ॥ पाण्डुसखादस्नानं काया
व । सञ्जयनयाय ॥ ॥ ओं डीं डीं वूं वेनाचनीयं रूं रूं रूं रूं स्नाहा ॥
अंखकायाव ॥ दूयकं चतुस्तुतय ॥ साधवासा धकमयि यदाच

सिनमया । नत्सर्वतवयं च । ७ सानना धकं मम ॥ ॥ विसृज्जना ॥
गच्छु गच्छु पनरुनं । स्नो स्नो नं पन मञ्जनी । यगु वृक्षादया दवा । न
विन्दु ४ पनमं पदे ॥ स्नानमसा । दव । वसि । पण्डु । धाय । स्नानचूर्ण
ल । नातुका वसि मतय ॥ स्नानमथ मचूर्ण ॥ नव्यसिखादनाख
चतुस्तुतय दव ॥ पाण्डुसखाद नव्यनयाय ॥ ३ ॥ वसिवाय ॥
अंखनमस्तुते दयकाव । सूर्ण साकिथय ॥ ॥ ५ नि निखकमसि
स्य धू निमिखा । धनि साकि नि श्री सूर्ययि नव्यनम ४ पूष्यनम ॥ ॥

निमाल्य वाहिनी नमः ॥ ॐ निग्रा विनेमस्तु नित्यकर्मपद्धतिः
यद्विधिः समाप्तः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ आयनदवनाचनविधिरिति
नः ॥ ॥ आचमनम् ॥ सूर्यार्घ्यम् ॥ उत्तरनमस्तु ॥ दानपूजाविधिवत् ॥
विद्यादानम् ॥ ॥ ॥ दिग्बन्धनं कृत्वा ॥ धनमुद्धि ॥ रुतमुद्धि ॥ ॥ सा
हयुगिष्ठा ॥ प्रामयाय ॥ मजन ॥ मारुकाया ॥ यथाविधि ॥ कलसाः
धन ॥ मारुकाय उद्रया ॥ मारुका प्रामयाय ॥ वहिर्मरुका ॥ धन ॥
न्यासयथाविधि ॥ ॥ मलया निषिञ्चय ॥ धनम् ॥ उद्रया ॥

मलमनुनयाकं कृत्वा ॥ मलमप्रामयाय ॥ ॥ स्वहृदि देवी ध्यात्वा ॥ बाला
कमिषुलाहसां ह्यादि ॥ ॥ निस्त्रयं नमस्तु ॥ स्वमित्रसिप्यदं कृत्वा ॥ मा
नसंपूजयित्वा पंचायतानमस्तु विद्यां यथागच्छिजपि निवद्य ॥ ॥
पूजासंकल्प ॥ ॐ नमः ॥ आमाहागिपुनस्तु नदीचनगसिद्धे नमः ॥
नित नदजा मनोका आवाकै मन्त्र नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
पादुका प्रवन धर्मार्थिका प्रमादुपायिका मया आगुननाथसमधिष्ठि
तग ॥ मपल्यदिपी ० दवनापूजा आस्तु नदीपूजा नयधर्महक निष्ठा ॥

पूष्याऽश्लिष्वधप०१॥ मूलनगियाऽश्लि॥ नव्यनि३॥ ऋष्यानादिगि
कोत्तंगं॥ मीनीपूष्याऽश्लि॥ गत्वधपनपूजान॥ पाठ॥ उच्यतेतुसंस्का
याय॥ पाठस्तान॥ ॐ निरुद्धपादिपूजय॥ स्वजिनसिगुननव्यध॥ ॥
आत्मपूजा॥ नत्वत्तमधनं॥ पिथपूजा॥ हनभुदि॥ आत्मपूजा॥ दवि
स्वनपस्तान॥ ॥ साहिनीय०१॥ ॥ ॐ नमः४शिपन
सुन्दरीदय२॥ ॥ जयंतंशिपनादवीनीर्मलशानिनीपीनीचन्द्राक
विक्रिमध्वस्तदिव्यामनस्वयिमा॥ जननीविश्वव्यापित्वकृताकाल

सुपिनी॥ मानप्रियथगमदवी॥ जहिमांशिपूनधनी॥ जयनिजगर्ज
ननी॥ निरुद्धनिधि॥ कालन॥ जामयी॥ अर्ककोनिर्न॥ जपुला॥ मनयाना
काहिनी॥ महाद्व॥ मनलाचनदविलं॥ दिव्यस्तन४पनाकेदायिनी
शिवनत्वस्वरूपा॥ नकाना॥ दिव्यसिद्धस्वयिनी॥ कोंकाननयापुज
यका॥ ॐ निरुद्धवद्वस्वरूपा॥ मन्त्रिचिर्विषुनरु४जिनातत्वदवीदिव्य
मान॥ अर्कपुष्टमहासिद्धिलक्ष्मीमहाकालि॥ जयजयकृद्विकालंसा
कवृष्टमा॥ जपुष्टलक्ष्मी॥ शिपथकामनूपधनी॥ ॥ ॐ नमः
विक्रिपूपादि॥ ननकाकालनया॥ ननकवुद्धा॥ ॥ ॐ काठि॥ ननी॥ किंव

धैर्यं स्वचन्द्रद्वी महापीनश्वनी महागेनी सिद्धिवागश्वनी को
लिनी कोनी शोषो जायमान ४ प्रबंध ४ पिय ४ नत्कन्द मलान्न ससिद्धि
विहां यमकात्मकत्वं प्रभूफाहास्यार्थान्नकान ४ प्रहा ४ कान ४ साहावा
षट् रुं कान स्वरासिन ४ कंकान नूपा प्रनापिता ४ महाधान संसासि
त्वं पुवाहमलनिकत्वं कलानीन नूपाविश्व संसातयापकत्वं सिद्धिनि ४
सुष्टि सहातविच्छेदकत्वा ४ यनावुक्त भक्ति र्हियन भिपना निर्वर्ति प्रद
प्रदिप्रदा ४ निधिषी ३ कलापूत नूपा निप्रखादिः वृत्तकलादिषु ४

नक्षत्राणां कचित् त्रिषु पालसं हायेनत्वं कर्तव्यं नित्यं हि त्रिषु पाल
वृत्ताकात् कुतुलाहव नत्रषु त्वमकरपा जगत्पूजापितृ वाक्कि
त्रोडीषु जनादनीत्वं हेतवीत्वं परममित्र भूषापी वृत्तापुपूक्तिकवस
कग्रसिकत्वं विरु निर्विम्बितिका निर्वेख निर्वर्ति निलाचम्बमिः
स्वलात्वं सकला सह प्रमृगय ४ सह प्रमाषा सह प्रनगात्तु मेरुवारु सह
प्रचनम्भपना वृत्तनखा यथियायन जापवना काश स्व नूपा कर्षहि न
जामयि यनावुक्त भक्ति वसंतावन की नमनां स्व नूपा यना मोक्ष पूरुत्तिका

किञ्चन लक्ष्मधरा प्रियं न सृजन्ती च न च ददन्ति न त्वमपि किन्तीति मनिमयक
कुलाः न त्वमनिमयस्तनन कामन यन धायगा सून त्वाधिक न पः
न मनमनायमाना न च न नात्यां तद्विने लान विन्दू नमस्तुत्यां इदं कः
मस्तुनिका त्याय निद्रमस्तुयना धमिवा ॥ दमस्तु निपना दवी जननीः
विश्व व्यापिनी ॥ सिद्धमस्तु शास्त्र निरुद्य निगतां पत्रमश्वती ॥ हे नवननम
स्तुत्यं काम द्वादन सृजन्ती ॥ सृजन्नापथमा ॥ न निगतां प्रियं न श्व
ती ॥ इति शायन दवगामा सिनी मुद्रा समाप्ता ॥ दवगिह किस्तुन हं त्या
दि ॥ रगवनिहा गंगमहव आमस्तु प्रियं न सृजन्ती आगच्छ ॥ इति कः

रसनिदिगाहव सन्निवृद्धि वममपूजां ॥ राक्षसस्तु धिस्तु नं कृत्वा
षाडशापचातं पश्य ॥ मस्तुन प्रिया क्रुसि ॥ नयनि ॥ प्रियं अथा निमृडा ॥
पश्य वलिविय ॥ स्त्रोधनं कृत्वा ॥ नगोकलसपूजा ॥ ॐ हूं सं ॥ आधनम
केश ॥ त्यादि ॥ मुद्रास्तु टिकमं कागं विन नृच नृमो लिपनं ॥ वनारय
कनसां नं मृदा माला धनं हनं ॥ नवं ध्यात्वा महादव मिमु कामार्थः
सिद्धय ॥ पश्यं नम ॥ ॐ हूं सं ॥ मस्तु जयाय नमस्तु नयनाय महा हेनवाय
महामाक्षी भक्ति भक्ति नाय स ॥ ॐ हूं सं ॥ यादकां ॥ ॐ गंगमेश ॥ ॐ यमना

श्रावणनादि चन्दना कुण्डलं नमः॥ धनूं मूढा॥ वलिदद्यात्॥ गं गं
गं गं॥ श्रीकूलगणेशाय नमः॥ धनं वलि॥ ज्यो नन्दनद्यादि
यचमारु कल्याणनमः॥ कौतुकादि सहित कूल कीमती कः
ल्या नमः॥ दुस्केन॥ शशियेनमः॥ सिंधु मूढा॥ लं स व्री नमः॥
वलि॥ धय॥ दीप जाया॥ ॐ हूंः स्त्राहा॥ सुगु॥ न होष भित्यादि॥ नमः
स्त्रा॥ ॐ नि॥ क मू य जा॥ पातु य जा॥ चतुषी ० य जा॥ पंचयुता
सनय जा॥ ॐ निपी ० य जा॥ ॥

१०६

आशा भट्ट
ASNA ARCHIVES

1.066

कादाव

कादाव



कादाव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
स्वस्ति श्रीगुरुगणेशाय नमः श्रीगुरुगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
जयगणेशाय नमः ॥

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कादाव

कादाव



कादाव

शिवकुनामूलदेवीमाध्व॥मूलविद्याया.प्राध्यायाम.मध्यादिकेनः
षष्ठ्याया॥युर्वकं॥देवीनयमालीनं॥कलास्यांयुष्मांजलि
मादाय॥गुखधुमूडावध्व.मूलाध्वलात्कु.धुलिनीउत्ताय.सरुमा
नकमलिनः॥सू.नकीना.समिक्तलांमूनदेवीनयाध्वला.मानः
सोपचात्रे॥युजयित्वा.नेजात्रयतामा.याद्यनरु.जावरुनासायु
कुनयुष्मांजलिनी॥साय॥हेनवीमूल॥नमः॥श्रामहृगियनसु
न्यनी॥महापद्मवनानक.कानधनन्यविगुरुं.सर्वरुनरुन

मान.नध्वरुयनप्रभ्वनी॥नस्मिन्मधुलसानिध्व.कनरुखाहा॥
१॥रुचिर्थाप्री०ननिधायत्॥रुगवनिश्रामसहृगिय
नसुन्यनी.॥रुगागुरु॥रुमिष्ट॥मूलमनुनसंहायन.॥
संनीधन.संनिनाधन.संमूखीकनध.षष्ठ्यायासेकलाकल.ध्व
ला.रुंनवगुरु.धनू.मूडाया.मृत्तिकेनध.महामूडायायनमिक
नध॥॥ध्वन॥॥श्रुं॥श्रुवाव॥नथध्वनं.प्रवध्वमि.गिद.मे॥
सवनीयकं॥नन॥यद्यनिरांदवी.वालाकिकिलनानूध॥॥॥उवा

कसुमसंकाशां. दादिमीकसुभायमां। यद्गनागयुतीकाशां. कंके
भायकसंनितां॥१॥ सुनलकूटमालिक. किंकिताजामुतीता॥ मरु
नलप्रफंजगु। किनीटद्विनाजितां॥३॥ पुसूनगधमाषय्यकिवलोन
हारितां। कलालिकेलंगकाशां. कूटिलालकेयलवां॥ भायल्यग्रन
गकाशां. वदनांतीजमधुलां. किचिद्वर्द्धकूटिल. ललाटमृदूयदिकां
॥५॥ पिनाकधनूनाकाल. ललाटांयलमध्वनी। अनन्यमृदिगालालः
लीलीदालिगलावर्णां॥६॥ सुनलमयूखसंधान. विलसद्वमर्कछलां

॥सुगुणमधुलाहोग, जिमन्दाप्रतमधुला॥१॥विश्वकर्मादिनिर्मा
 ण, सुखसुखसुनासिनां। नांविन्दुमविम्वार, नकोषीममृगीप
 मा॥८॥मल्लिकामरकलाद्वयकयकिविनाजिगा। कथन्दधव
 नाकान, मधुलासविनाजीनां॥९॥स्मितमाधुर्यविजिन, माधुर्य
 नसुगुणां। नत्रदिपसमूलोसि, जिह्वाप्रमलराषिणा॥१०॥कनी
 युवादिनीदुनी, यरुनामूलविटिका। दादिमीवीजवडाहं, यन
 यकिविनाजिनां॥११॥ननोपम्यगु। मयन, चिक्कादग। मरिगा
 ॥विस्तार्यकिक्कासाध, कष्टसुखविनाजिनां॥१२॥कंवगीवामरा

देवी, मनालसुलि तेजुजे। ध्यायामक अंविदू। धनूयव्य ममला।
चिगा॥१३॥ नका न्यनदना कान, सुकमालकनाय जां। कनावुज खजा
ल्ला, विनाजिननेर सुला॥१४॥ वाहु मलन कयून। कन कांगेद (म)
लिगां। मका हानल नायन, स मूनन पया धनां॥१५॥ गिवलिवली ना
यका, म धद, म सु, गारिगां। लाव ध सलियाव ल, काल नाहिविनाजिगां
॥१६॥ नून धन तल यठिनं, कां चिय क मिन विनी। निग म वि म वि नय,
नामना जि वि जिगां॥१७॥ कदनी सन न सु म सु क मा ना न मी ग्वनी। लाव

ध कदली तुल्य, जं धा य ग ल म ठिगां॥१८॥ गृह गृह रूप द द र्द पुप दाः
जिन क क या। न नदी धा गुलि ल म्ब, नख च द विनाजिगां॥१९॥ स क
स्वस्तिक सं खातु, (म) धां कि त य द द सा। व द्म वि षू मि ना न त्र नि यः
ख च न म्भं व जा॥२०॥ लोहित जित सिंदूर जया दा ठि म ना गिनी। न
ख व म्भु य नि धा नां, या अं क म क नी य ना॥२१॥ न कृ य ष्य नि वि द्यां च
न त्ता ह न म्भ ल षि गां। च तु तु जां गि न्गं च, पंच वा द ध नू ४ म ना॥
२२॥ क र्प्य न म क ल स्मि श्र ग म्भ ला य लितान नां। म हा म्भ ग म्भ दा दा

म. क. क. मान. ध. वि. ग्र. हां ॥ २३ ॥ सर्व. ज. ग. न. व. अ. द्यां. सर्व. हे. न. म. शु. षि.
तां ॥ ज. ग. दा. द्वा. य. ज. न. नी. ज. ग. दु. ज. न. का. नि. नी. ॥ २४ ॥ ज. ग. दा. क. षि. ध.
क. ली. ज. ग. त्स्व. व. न. र्पी. नी. य. द्या. स. ना. दि. वि. वृ. धे. ४. सूर्य. मा. ना. न्न. स.
रु. वी. ॥ २५ ॥ वि. द्या. ध. न. य. न.ं. श्री. वृ. जि. द्वा. मा. क. वि. ना. जि. ना. ग. ध. र्च. ना.
ज. कं. न्या. लि. अ. लि. ना. ग. न. क. वा. म. नां ॥ २६ ॥ वि. ज्ज. व. स. म. खे. क. य. ज.
य. म. द्य. य. नं. य. नां. सर्व. मि. न्नु. यी. द. वी. सर्व. शे. हा. ग. ध. सूर्य. नी. ॥ २७ ॥

रसना नविचि ॥ दन्त वा वन ॥ ॐ नम ॥ तुनि सिय ॥ कौ नम ॥ लाहान सिय ॥
 सौ नम ॥ स्वा ल सिय ॥ सागी चि क्रिय ॥ उर्दु कसि लादि ॥ न्यास या य ॥ नादन
 मूलमन्त्रे न साय ॥ कवरी य द्रु अवरु सुन ॥ स्वन मूडा ॥ लख स सा लाया
 न वा य ॥ कौ वाय ॥ मूलन सा पा जय ॥ वाक् ॥ अद्य ॥ अमूक गत ॥ अमूक
 नाम ॥ हं काय वा द्या मति निविध पाप कृपार्थ त्ना नम हं क निषा ॥ स्वा सिय
 य नै ले वे ह जय ॥ लख लाहानि स न या ज ॥ ~~स्वका सौ द्रु का य~~ ॥ स्वका द्वा
 सौ द्रु काय ॥ ३ ॥ ऊव द्वा सौ पि काय ॥ शाल द्रु पा ॥
 ॐ ये नु ना जाय विद्रु मा हाय काय विम हित ना य नु प वा द या न

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यथा कर्म वाक्यं कथं संकल्प्य ॥ श्री सूर्यायः
श्री गुरु नमस्का ॥ प्राप्ता या मेः ॥ अस्तु श्री दत्तपाल मंत्र स्वरूपः बुद्धि मणिना
परितुष्टं च दत्तपाल देवताः न ह्यप्यसर्व विघ्न ना समय वित्ति योगः ॥ दंत
द्वी द्वै द्वौ द्वैः ॥ न तं षट् दिग्भ्याम् ॥ जल पात्र पूजाः आत्म पूजा ॥
आ धार सकला दीर्घा ॥ ॐ नमो यत नमः स्कंदाय नमः परमाय नमः प्रण
यत माः कंसराय नमः कुन्ती कात्यायन नमः पंचप्रतापाय नमः बामाय
नमः ॥ अष्टा यत नमः गोपी नमः कालिन नमः कलविक्व नीरवल वि

[illegible]

जह्नुदेवलाख्यगु युजायायगु विधि ॥ तलमाधे जह्नुदेवयीधुनु ॥ रुयायसद्धे आगमे सिद्ध
 कायावमनाविया यायातिगवय ॥ ॥ वहिलिंजह्नुदेवकावनील त्वायमानं किं वच्चातयायु
 जानु १ यई चाल १ जोङ्गलाखवने वहिलियोसवियाव ॥ लाखयाहय ॥ ॥ तलमधिदबु
 रिमिथस यक्षिमसोचकं रुधोकाकुवतये ॥ ॥ आकाडनेस आचाजुचोङा सिफोदेवला
 सोये ॥ लामोयजोलं ॥ जु १ युजाया २ यतिथो युजातायो यणभादलु सिफा तालचाया चफलि
 आरति मिसलि ईका युका सिको ॥ ॥ आकारुने खलिचोय ॥ देवपाहने णाषं मदलचोय ॥
 देवतसाय ॥ ईकायलकांगाले सिफाचाय तालचा युजा भारं त्वाय मोखनसिद्धखाछाय ॥ सिफा
 आरतियाय थतेधुनगव ॥ तालचाया नाखं हायकं सिफदेवजोख जह्नुमिमोङ्ग आकाडका

हस्तमाध

पताकालि

यावदबुलिय रुथातसनययने थने हरमिधिलासोयविधि ॥ ॥ अथ युजाववक्रिजि
 यकं कतयुजानु १ जागोलजादयके यश्चवलि नासगोरजा या २ वलि किं वचाजो २० ॥ दक्षिक
 खियकायश्चयुयश्चदुवाजु १ ताययोताधुयुयाजजोमकासिद्ध ईना यं चामृत दयकं समाधिहि
 १२ ॥ ववहि तलमधिदवदबुलियुजा छालवने ॥ ॥ रुयांसिफदेवयुजाया ॥ जायुजावोय
 वलिया १ यश्चवत्रिदेवसासगवजा वसलये ॥ युष्यभाजन स्राननेतसिद्ध जजोमका दक्षि कर्णय
 यका यश्चयुयश्चदुवा त्वात थतेधुनगव ॥ साकुलितोयाव युजाया ५ य धुयदिय मोहनीय
 य ॥ जाय तोत्रतंधुनके दक्षिणादेवयातं ॥ थतेधुनगव दक्षिणयतिवो ५ पिदेवसोखं युजा
 उत्रयतिचोपिदेवयात जह्नुमियातस्रत कि गो नाषजजोमकादि गोचाजो दविमा ~~सिद्ध~~
 युजायाकवोय ॥

या लवने ॥ साक्षया तं यथासन चोय ॥ वलिच्छया तयात्र किंवा जो ३ तथा युजायाय ॥ छाड सा
लद थु ॥ सा सुधार लं जवस ॥ हा सा र लं व व स युजायाय ॥ स्नान वेत सिद्ध ज जो म का लान ॥ पुन सुदि
अम युजा ॥ धुय दिय जाय ॥ तोत्र दक्षि नातं धुन के ॥ थ्व ते धुन ज व सि क दे आया द वे व ड ॥ सुयि युजा ॥
द वु या कु दे वे ॥ ने दे ल्य कु न स व ना व ॥ के स क ल्य याय ॥ धुन इ ग व य सु हि सा ॥ ल ई मे स ॥ थ्व ते धुन ज
व ॥ स गान मो ह नी छा य ॥ द क्षि ना ॥ स्वा को काय ॥ ज ज मान ॥ त्व सि द्ध स गान मो ह नि वि य ॥ इ ति व क्रि या पु
जा ॥ ॥ अथ चारु स ॥ पु चो न किं युजायाय ॥ जु १ युजा ॥ वलिच्छया तयात्र ॥ यथासन चोय
॥ ज व स ॥ ॥ ज व स पु च न किं ॥ द थु स म हा दे व ॥ व व स वे ला चो न की ॥ पु च न कि या ह व ने व स
चा रे या ना मु नं पा १ पु च न कि या ठ मा ल ॥

लये ॥ पुज नं ॥ गुरु म ल्का न्या स ॥ ज या त्र अर्घ पात्र ॥ पुन सुदि आत्म युजा ॥ श्री संचर्ता आ वाहन ॥ त्री
दे व मु ले नं युजे ॥ धुय दी प जाय ॥ तोत्र दक्षि ॥ स ग व न तं धुन क ॥ स्वा को काय ॥ चारु स हि सा मु मा ल
थ्व ते चारु स या किं वि ॥ ॥ अथ सुथा स या विधि ॥ जा युजा ॥ च मा धि युजा युजा जो लं ह थ
धुनु या थे जि य के मा म ॥ युजा ह थ धुनु या थे ॥ ज या तोत्र नं धुन कं ॥ य द्धि म सो या व त्री स की
युजायाय ॥ सा रं या ह व ने यथासन चो या व ॥ वलिच्छया तयात्र ॥ किंवा जो ३ ह ने वो या युजाया
य ॥ हा कु ष्णाल ल द थु ॥ सा सु धाल लं ज व स ॥ हा ड ॥ धाल ल व व स ॥ पुज नं गुरु न म स्कार ॥ यथा
स ॥ जल पात्र ॥ अर्घ पात्र ॥ पुन सुदि ॥ आत्म युजा ॥ श्री संचर्ता आ वाहन ॥ त्री दे ॥ सा कु लि सो या युजा या

म॥ धुपदिप. जापलोत्र ॥ सिद्धदेवका हने ॥ सिद्धदेवा हने वना। वचुं यिपुजायाय ॥
 नागे मसितोले पयि संकल्प याय मड ॥ नागे सिधे मनं फई संकल्प याचवने. पुसुहि सा. फई
 मेस. दुगु. हंस. त्याय ॥ ध्यते बुन गओ ॥ सगोन मोहनी देके छाय. दक्षिना काय ॥ नजमान यात स
 कलयात खान सिद्ध सगोन मोहनि विय ॥ ध्यते हर सिद्धि जल्ला देव पुजा विधि ॥ हर सिद्धि मय
 कनले. यमलुछे. देगुया चके मड ॥ देव यड. डालि नित्य कर्म देगुलिया चके गुल ॥

सुठयात मुमिया ४ माल ॥ सिद्धदेवपा १ हाकु चालपा १ सागु चालपा १ त्याडु चारलपा १
 वाहेगाथा १ पुचनकी जापा ५
 विहि. वालिया
 कयात. बजि
 मुस्या. डाल
 माल. जाल
 माल. जाल

जल्ला देयाई जाल वरिया	जुद्धि को तो पुजा. जापुया थुया. मता कला लि ॥	वाहे या जोर
विधि चागव	१६ मधु. मुस्या. डाल. लाखल वजलय ॥ पालखा ॥	जुद्ध पुजा. मुद्धन या
विमालुया	१६ हि १६ चता माधे. यंश्च रगिगा. खानतय ॥	विधि वा. विसोहे
याचागव	३१ गव १६ लि. जाकितय गव १६ वजि या धोनय ॥	पाचापा धो. धो पा
याधो या	१६	मकले. सो जालं गुकं
धोयो	१६ अजिथो	सुधाया पुजा जाले जुद्धि १ को तो पुजा वरियो थे गुल ॥
धालापो	१६ काधो	१ गुलं १६ वरि याति जोले याय मा माल जिय के ॥
फई चाल	६	या पाप गुलं मधे. नाहल पुचनकि पा १ सिद्ध देवा १
मेसल	५	मुदेवपा ३ गुल ॥ वाहा. फेचा ८ दुगु जं १ मेस १

हंस